

अवधपुरी के रहवासियों ने शराब दुकान के विरोध में किया धरना- प्रदर्शन

समय जगत, भोपाल। अवधपुरी के त्रिपुरुष तिराहे पर शराब की दुकान खुलने के विरोध में अवधपुरी के समस्त प्रदर्शन द्वारा जबरदस्त धरना किया गया। इस धरना प्रदर्शन में आसपास की रहवासी कॉलोनी के हजारों लोगों ने आसपास के रहने वाली महिलाओं के नेतृत्व में धरा दिया। सभी ने एक स्वर से आजाव उठाई कि वह शराब की दुकान यहाँ अवधपुरी में नहीं खुलने दी जाएगी जिस जहां यह दुकान खुलने जा रही है इसके लिए 50 मीटर पर मां भगवती दुग्धों जी का शक्तिपूर्ण है। लिंग 50 मीटर पर बचपन स्कूल है जिस सारी चीजों के होते हुए भी खुले आम एक व्यापारी शराब की दुकान खोल



ठीक सामने अस्पताल भी है। इन्हीं सारी चीजों के होते हुए भी खुले आम एक व्यापारी शराब की दुकान खोल

उपर्युक्त हुआ और न ही उसने कोई दस्तबेज प्रस्तुत किए। यहाँ के लोगों का कहना है कि इस अवधपुरी की दुकान ना खोलना देने के लिए हम प्रश्नापत्र एवं जनप्रतिनिधियों से अपेक्षा करते हैं कि वह आगे आएं और इस दुकान को न खोलने दिया जाए। अवधपुरी परिषेत्र जनकल्याण महासमिति के अध्यक्ष समन तिवारी ने बताया कि थेव के लोग मंत्री अमित कृष्णा गौरी से मिले एवं मंत्री ने एसडीएम का निर्देश दिए कि दुकान किसी भी कीमत पर नहीं खुलनी चाहिए। दुकान स्थल के सामने अंडरबांद रामायण का पाठ होगा। ताकि शराब मार्फिया को सुन्दरी आए और रहवासी इलाके से शराब की उस्थित आर आई पटवारी द्वारा आई भूमि स्वामी को मैके पर बुलाया गया पर न तो वह

रहा है और प्रशासन मौन है। मैके पर साफ भूमि सीलिंग की पाई गई आर उस्थित आर आई पटवारी द्वारा आई भूमि स्वामी को मैके पर बुलाया गया पर न तो वह

भारतीय संस्कृति के अनुरूप मंडला में प्रवेशोत्सव का भव्य आयोजन

मंडला। स्थानीय ई. ए. रानी अवंती बाई उच्चतर माध्यमिक कला विद्यालय में शैक्षणिक सत्र 2025-26 का शुभारंभ प्रवेशोत्सव के रूप में भव्य आयोजन के साथ हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत सभारंभ वर्दन से हुई, जिसमें शैक्षिक वातावरण में एक धार्मिक और सांकेतिक महोल का सुन्जन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीमती पार्वती धमकेता ने अपने संबोधन में छात्राओं को अनुशासन और कड़ी मेहनत के महत्व को समझाया। उद्घोषन भारतीय सिंह प्राली की गोवर्णशाली परंपराओं, प्राचीन वैज्ञानिक उपलब्धियों और खगोलशास्त्र के महत्व पर भी ध्यान दिया गया। दुकान किसी भी कीमत पर नहीं खुलनी चाहिए। दुकान स्थल के सामने अंडरबांद रामायण का पाठ होगा। ताकि शराब मार्फिया को सुन्दरी आए और रहवासी इलाके से शराब की जल्द हट जाए।



को शैक्षणिक पुस्तकों का वितरण भी किया गया, जिसमें उनकी पढ़ाई में सहाय योगदान। कार्यक्रम में विद्यालय के सभी शिक्षक-शिक्षिकाएं, छात्राएं और स्टाफ सदस्य उपस्थित हो। कार्यक्रम का संचालन प्राचार्य जय लक्ष्मी रोनी ने किया, जबकि संयोजन और मंत्रिकारण कछवाहा ने किया। कार्यक्रम का सफल संचालन साधना श्रीसत्तव प्राचार्य ने किया, और आभार प्रदर्शन के साथ कार्यक्रम का समाप्त हुआ। इस भव्य आयोजन ने भारतीय संस्कृति के अनुरूप शिक्षा के महत्व को उजागर किया और विद्यार्थियों के बीच नई ऊर्जा का संचार किया।

पानी की समस्याओं का समाधान नहीं होता तो करेंगे उग्र आंदोलन

खिरकिया। पेजेजल संकट से पेशेशन होकर राजाबारी की महिलाओं ने केलेक्टर की जनसुन्वानी में सिर पर खाली बर्तन रख विरोध प्रदर्शन किया। दरअसल, हरदा जिले के वनप्राम राजाबारी की महिलाओं को करीब 8 माह से पेजेजल संकट का समान करना पड़ रहा है। लेकिन पीएचवी विभागीय की उदायीनी के चलते यह योजना धरातल पर दम तोड़े नजर आ रही है। एक तरफ देश के प्रधानमंत्री गरीबों की घर तक पेजेजल पहुंचने का काम कर रही है, लेकिन इनके विपरीत जिम्मेदार अधिकारी की लापतवाही के चलते यह योजना का लाभ गरीबों तक नहीं पहुंच पाया रहा है, मजबूरन गरीब लोग अधिकारियों के चक्र लगाने को मजबूर हैं। बता दें कि गर्मी सुख देते ही ग्रीष्मीय क्षेत्र में जल संकट गहरा गया है। जिससे बन्द्राम की महिलाएं रिस पर खाली बर्तन रखकर जिला पंचायत में प्रदर्शन किया। करीब एक घंटे तक प्रदर्शन के बाद महिलाओं को यास लगानी पड़ती है। एक बालिका जिला जिला पंचायत से प्रदर्शन के लिए लाए खाली स्टील के बड़ा भरकर लाइ। इसके बाद महिलाओं ने अपनी यास बुझाई। इधर, महिलाओं ने एसडीएम कुमार शानू देवडिया को ज्ञापन सौंपा। जल्द पेजेजल संकट का निराकरण नहीं होने पर उग्र आंदोलन तक की चेतावनी दे डाली। मीडिया ने जब पीएचवी के ईंवें पवन सुख गुस्से से सवाल किया तो उन्होंने कहा कि चार दिन में समस्या का निराकरण करा दिया जाएगा।

जयपुर शहर को सीरियल ब्लास्ट से दहलाने की रची थी साजिश 11 वें फरार आरोपी फिरोज उर्फ सज्जी को रतलाम पुलिस ने किया गिरफ्तार

रतलाम। पुलिस कारखां का विवरण पुलिस अधीक्षक रतलाम श्री अमित कुमार के निर्देश पर रतलाम में अलसुका संगठन एवं विधि विरुद्ध गतिविधियों पर मुख्यकारी तंत्र संक्रिय कर कर्त्ता निरामी रखने से निर्देश दिए गए थे। इसी तारीख में दिनांक 02.04.25 को मुख्यकारी द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि निंबाहड़ा के अपराध क्रमांक 150/22 एवं NIA के प्रकरण क्रमांक 18/2022/NIA/DLA ka 05 लाल रुपाया का उत्पादन इनामी वार्टेड अरोपी फिरोज उर्फ सज्जी पिता फक्कर मोहम्मद रतलाम शहर में अंग्रीज घर बनाकर रखने के उद्देश्य से आया हुआ है। मुख्यकारी सूचना प्राप्त हुई थी कि विवरण के बाद मुख्यकारी के नेतृत्व में रतलाम पुलिस की 02 टीम बनाई गई। पहली कट ऑफ टीम में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री राकेश खाड़ा के नेतृत्व अधीक्षक श्री चौपांडी के सदस्यों द्वारा निरामी रखनी चाहिए। दुसरी टीम के सदस्यों द्वारा निरामी रखनी चाहिए। अंत में रतलाम पुलिस अधीक्षक श्री राकेश खाड़ा के निरामी रखनी चाहिए।



फरार आरोपी के छिपने के संभावित दिक्षिण के आपावधि के अन्तर्गत निरामी रखनी चाहिए। निरामी आनंद कॉलोनी के घर छिपा हुआ है। मुख्यकारी सूचना पर कारखां हेतु दिनांक 02.04.20 को पुलिस अधीक्षक श्री अमित कुमार के लागतार प्रयास के बाद मुख्यकारी के माध्माम से सूचना प्राप्त हुई थी। 02 दिन की लागतार प्रयास के बाद मुख्यकारी के माध्माम से सूचना प्राप्त हुई कि वार्टेड आरोपी फिरोज उसकी बहन रेहना

छात्र-छात्राएं लक्ष्य निर्धारित कर पढ़ाई करें



बीनांगं। छात्र छात्राएं मोबाइल त्रीम आमतं रुपाया के बाद अप्रैल से एसडीएम के सदस्यों के बीच विद्यालय के बाहर आंदोलन कर रहे हैं। अनन्द कॉलोनी रखना हुआ। अनन्द कॉलोनी स्थित रहेना के निवास के समीप पहुंचकर बोलिंग अनुसार कट ऑफ टीम के सदस्यों द्वारा निरामी रखनी चाहिए। एसडीएम के बाद अप्रैल से एसडीएम संघरण नरवरिया ने व्यक्त किए हैं। इस अवसर पर अंजुम कुरुशी, रमा मीना, गोपाल मैथिल, सुधा सोनी, अनुराधा साहू, बंदना बरौनिंग, कुण्ठा शास्त्र, वैशाली साहू, तारांदं सोनी, महेंद्र सिंह भील, दीपक राजपाति, श्रीराम हैसियत से छात्राएं छात्राओं को आंदोलन कर रहे हैं। उनके साथ श्रीमती प्रतिभा लोदी, प्रवेद भी मौजूद थे। उक्त कार्यक्रम की अधिकारी की अपेक्षा करें निरामी रखनी चाहिए। अभार उक्त कार्यक्रम के बाद अप्रैल से एसडीएम के सदस्यों द्वारा निरामी रखनी चाहिए। अंजुम कुरुशी, रमा मीना, गोपाल मैथिल, सुधा सोनी, अनुराधा साहू, बंदना बरौनिंग, कुण्ठा शास्त्र, वैशाली साहू, तारांदं सोनी, महेंद्र सिंह भील, दीपक राजपाति, श्रीराम हैसियत से छात्राएं छात्राओं को आंदोलन कर रहे हैं। उनके साथ श्रीमती प्रतिभा लोदी, प्रवेद भी मौजूद थे। उक्त कार्यक्रम की अधिकारी की अपेक्षा करें निरामी रखनी चाहिए। अभार उक्त कार्यक्रम के बाद अप्रैल से एसडीएम के सदस्यों द्वारा निरामी रखनी चाहिए। अंजुम कुरुशी, रमा मीना, गोपाल मैथिल, सुधा सोनी, अनुराधा साहू, बंदना बरौनिंग, कुण्ठा शास्त्र, वैशाली साहू, तारांदं सोनी, महेंद्र सिंह भील, दीपक राजपाति, श्रीराम हैसियत से छात्राएं छात्राओं को आंदोलन कर रहे हैं। उनके साथ श्रीमती प्रतिभा लोदी, प्रवेद भी मौजूद थे। उक्त कार्यक्रम की अधिकारी की अपेक्षा करें निरामी रखनी चाहिए। अभार उक्त कार्यक्रम के बाद अप्रैल से एसडीएम के सदस्यों द्वारा निरामी रखनी चाहिए। अंजुम कुरुशी, रमा मीना, गोपाल मैथिल, सुधा सोनी, अनुराधा साहू, बंदना बरौनिंग, कुण्ठा शास्त्र, वैशाली साहू, तारांदं सोनी, महेंद्र सिंह भील, दीपक राजपाति, श्रीराम हैसियत से छात्राएं छात्राओं को आंदोलन कर रहे हैं। उनके साथ श्रीमती प्रतिभा लोदी, प्रवेद भी मौजूद थे। उक्त कार्यक्रम की अधिकारी की अपेक्षा करें निरामी रखनी चाहिए। अभार उक्त कार्यक्रम के बाद अप्रैल से एसडीएम के सदस्यों द्वारा निरामी रखनी चाहिए। अंजुम कुरुशी, रमा मीना, गोपाल मैथिल, सुधा सोनी, अनुराधा साहू, बंदना बरौनिंग, कुण्ठा शास्त्र, वैशाली साहू, तारांदं सोनी, महेंद्र सिंह भील, दीपक राजपाति, श्रीराम हैसियत से छात्राएं छात्राओं को आंदोलन कर रहे हैं। उनके साथ श्रीमती प्रतिभा लोदी, प्रवेद भी मौजूद थे। उक्त कार्यक्रम की अ

संपादकीय

भ्रष्टाचार उन्मूलन के हों प्रभावी प्रयास

ੴ

देश में भ्रष्टाचार बढ़ा एवं गम्भीर मुद्रा है। खासकर राजनीतिक क्षेत्र का भ्रष्टाचार देश के लिये गंभीर समस्या बन चुका है। राजनीति में अनपढ़, भ्रष्ट, अयोग्य, क्षमताविहीन लोग सिर्फ भ्रष्टाचार में लिस रहते हैं। शासकीय पैसे का योजनाओं, परियोजनाओं के नाम पर दुरुपयोग होता है। एक मशीन, जिसे आप और हम 22,000 रुपये में खरीद सकते हैं, उसके लिए सरकार ने हर महीने 1,844 रुपये किराया चुकाया—वो भी लगातार पाँच साल तक! अब हिसाब लगाइ—2,100 मशीनों के लिए चार साल में 18 करोड़ रुपये बहा दिए गए, जबकि इनकी कुल कीमत थी बस 4.5 करोड़ रुपये। यह कोई फिल्मी स्क्रिप्ट या मजाक नहीं है, बल्कि दिल्ली सरकार के खाद्य एवं आपूर्ति विभाग का असली कारनामा है। एक ऐसा फैसला, जिसने जनता के खून-पसीने की कमाई को पानी की तरह बहा दिया और पूछने वाला कोई नहीं कि आखिर यह हुआ कैसे? यह कहानी सिर्फ मशीनों की नहीं, बल्कि उस सिस्टम की है, जो हमारे टैक्स के पैसे को लुटाने में माहिर हो चुका है। बात शुरू होती है फरवरी 2021 से, जब दिल्ली सरकार ने सार्वजनिक वितरण प्रणाली में सुधार का ढोल पीटे हुए एक बड़ा कदम उठाया। उसने भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बीईएल) से 2,100 इलेक्ट्रॉनिक पॉइंट ऑफ सेल (ईपीओएस) मशीनें किराए पर लेने का फैसला किया। हर मशीन का किराया तय हुआ 1,844 रुपये प्रति माह, और यह सौदा पाँच साल के लिए पक्का कर लिया गया। चार साल गुजर चुके हैं, और अब तक सरकार ने इन मशीनों के लिए 18 करोड़ रुपये से ज्यादा खर्च कर डाले हैं। लेकिन चौंकाने वाली बात यह है कि इतना पैसा खर्च करने के बाद भी ये मशीनें सरकार की नहीं हैं—ये आज भी बीईएल की संपत्ति हैं। अब सोचिए, अगर ये मशीनें खरीदी गई होतीं, तो 4.62 करोड़ रुपये में मामला खत्म हो जाता। लेकिन नहीं, सरकार ने किराए का रास्ता चुना और जनता का पैसा हवा में उड़ा दिया। अब हिसाब को और करीब से देखें।

चार साल में 18 करोड़ रुपये खर्च हो चुके हैं, और अगर पाँच साल का अनुबंध पूरा हुआ, तो यह रकम 23.25 करोड़ रुपये तक पहुँच जाएगी। यानी, एक मशीन की कीमत से पाँच गुना ज्यादा सिर्फ उसके किरण में दे दिया जाएगा। अगर सरकार ने थोड़ा दिमाग लगाया होता, तो 4.5 करोड़ में ये मशीनें उसकी अपनी हो सकती थीं। रखरखाव का खर्च जोड़ लें, तब भी यह किरण की राशि से आधे से कम पड़ता। मान लीजिए, हर मशीन पर सालाना 5,000 रुपये रखरखाव में लगते—पाँच साल में 25,000 रुपये प्रति मशीन, यानी कुल 5.25 करोड़। फिर भी, खरीद और रखरखाव मिलाकर 10 करोड़ से कम में काम हो जाता। ऐसे भ्रष्टाचारियों को तो सजा मिलनी ही चाहिये। ताकि देश में सिद्धांतों एवं आदर्शों, शुचिता और स्वर्णिम संभावनाओं पर आधारित व्यवस्था सुटूँड़ हो सके।

नेपाली राजशाही के लिए हिंसक प्रतिरोध के निहितार्थ

पुष्परजन

વો ગુજરા જમાના થા, જબ રાજ બીરેંદ્ર ઔર રાની એશ્વર્યા કી એક ઝલક પાને, ઔર ઉનકી આવાજ સુનેને કે લિએ લોગ ઉમડ પડતે થે। વર્ષ 1990 મેં લોકતંત્ર કી બહાલી કે બાદ ભી બીરેંદ્ર કી આભા ફીકીને

नहीं पड़ी थी, जब उन्होंने अपनी पूर्ण सत्ता त्याग दी थी, और राजनीतिक दलों को राज्य के मामलों का प्रभार सौंप दिया था। यहां तक, कि माओवादियों ने भी, जिन्होंने कढ़ी मेहनत से हासिल की गई राजनीतिक व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह छेड़ा था, राजा की ज्यादा आलोचना नहीं की। न ही उन्होंने शुरू में रायल नेपाल आर्मी पर हमला किया, जबकि देश भर में पुलिस चौकियों पर हमले हो रहे थे। इसके बाद नेपाली राजशाही के 240 साल के इतिहास में सबसे बड़ा रहस्यमय और दुर्भाग्यपूर्ण पल सामने आया। वर्ष 2001 में बीरेंद्र के परिवार को भारी सुरक्षा वाले शाही महल में गोली मार दी गई। इसके बाद शुरू शाही जांच में तत्कालीन युवराज दीपेंद्र को नरसंहार के लिए दोषी ठहराया गया, जबकि वे कुछ दिनों तक बहोश रहे, उन्हें कोमा में राजा घोषित किया गया, और उनकी मृत्यु हो गई। यह जांच बीरेंद्र के दो भाइयों में से पहले, ज्ञानेंद्र की निगरानी में हुई। ज्ञानेंद्र की नीति पर सवाल भी उठाये गए। फिर जांच की लीपापोती हो गई। ज्ञानेंद्र और उनके पुत्र प्रिंस पारस की सार्वजनिक छवि उनीं अच्छी नहीं थी। लोग यह मानने को तैयार नहीं थे कि युवराज दीपेंद्र ने अकेले ही अपने पिता, माता, भाई, बहन और दादी को गोली मार दी होगी। दरबार हत्याकांड विदेशी पद्धयत्र भी साकित नहीं हो पाया। ज्ञानेंद्र 1950 के दशक में पहली बार चार साल की उम्र में राजगद्वी पर बैठे थे। तब ज्ञानेंद्र के दादा, राजा त्रिभुवन ने राणाओं के खिलाफ विद्रोह किया था, और दिल्ली निर्वासित हो गए थे। हालात ने उन्हें ज्ञानेंद्र को 4 जून, 2001 को दोबारा से ताज पहनने का अवसर दिया। ज्ञानेंद्र ने पांच साल के कालखण्ड में लोकतांत्रिक ताकतों को अलग-थलग कर दिया। अंततः सत्ता में आये माओवादियों ने 28 मई, 2008 को नेपाल की सविधान सभा के जरिये राजशाही समाप्त कर दी। लेकिन, पूर्व नरेश ज्ञानेंद्र और उनके परिवार को आवास, सुरक्षा सुविधाएं शासन द्वारा दिया जाना जारी रहा। नेपाल में जब उनके राजाशाही थी, नरेश भगवान विष्णु के अवतार और हिन्दू राष्ट्र के संरक्षक माने जाते थे। विगत कुछ वर्षों से राजशाही समर्थक हिन्दू राष्ट्र की वापसी के एजेंडे को सुलगाने लगे थे। 11 मार्च, 2025 को खबर आई कि नेपाल में इस एजेंडे के समर्थकों ने राजा ज्ञानेंद्र के साथ उ.प्र. के मुख्यमंत्री योगी की तस्वीर भी लहराते हुए नरे लगाए। पूर्व राजा ज्ञानेंद्र उससे पहले, 30 जनवरी, 2025 को गोरखपुर अपने इष्ट देव, गुरु गोरखनाथ को खिचड़ी चढ़ाने आये थे, तब उन्होंने यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से भी मुलाकात की थी। गत 1 अप्रैल, 2014 को विश्व हिन्दू परिषद (विहिप) के नेता अशोक सिंघल ने कहा था, कि अगर नरेंद्र मोदी भारत के प्रधानमंत्री बनते हैं, तो नेपाल हिन्दू राष्ट्र बन जाएगा। फिर चौतारा में एक मंच योगी आदित्यनाथ के साथ साझा करते हुए, अशोक सिंघल ने वही बात दोहराई कि हिन्दू राष्ट्र और राजतंत्र की वापसी होगी। 17 नवंबर, 2015 को 89 वर्ष के अशोक सिंघल, गुरुग्राम के मेदांता हाँस्पिटल में सिधार गए, नेपाल को हिन्दू राष्ट्र दोबारा से बनाने का सपना अंधूरा रह गया। इस बीच, परदे के पीछे से ज्ञानेंद्र के लोग दिल्ली दरबार से संपर्क साधते रहे। अपरोक्ष रूप से ज्ञानेंद्र ने अपने दो निकटस्थ ज्योतिरादित्य सिंधिया और डॉ. कर्ण सिंह से भी राजशाही वापसी में मदद की उम्मीद तोड़ी नहीं थी। ज्योतिरादित्य सिंधिया की मां, माधवी राजे (किरण राज्य लक्ष्मी देवी), नेपाल के शाही परिवार से थीं। और डॉ. कर्ण सिंह की पती महारानी यशो राज्य लक्ष्मी नेपाल के अंतिम राणा प्रधानमंत्री मोहन शमशेर जंग बहादुर परिवार से। दोनों अब दिवंगत हैं, लेकिन नेपाल के शाही परिवारों से भारतीय रजवाड़ों का भावनात्मक रिश्ता बरकरार है। यह कहना कठिन है, कि हिन्दू राष्ट्र समर्थक दिल्ली के राजनीतिक गलियारों से कितनी मदद ज्ञानेंद्र के लोगों को मिल रही है, लेकिन नैतिक समर्थन मिलने से कोई इंकार नहीं कर सकता। जो कुछ काटमाडौं में हुआ, वो बीभत्स और विनाशकारी था। उस दिन टिक्कुनों में राजभक्तों का प्रदर्शन हिस्सा में परिवर्तित हो गया, जब दुर्गा प्रसार्दी जीप दोड़ाकर सुरक्षाकर्मियों और प्रत्यक्षदर्शियों को कुचलने की कोशिश करने लगे। हिंसक भीड़ ने जड़ीबूटी प्रारेसिंग एंड प्रोडक्शन कंपनी के आठ वाहनों को जला दिया, सीपीएन (एकोकूट समाजवादी) के मुख्यालय में आग लगा दी। कोटेश्वर में उन्होंने भट्भटनी सुपरमार्केट को लूट लिया, और जमकर तोड़फोड़ की। उग्र भीड़ ने पत्रकार सुरेश रजक पर पेट्रोल डालकर आग लगा दी, जिससे उनकी बहीं झूलसकर मौत हो गई। पुलिसकर्मियों और प्रदर्शनकारियों के बीच झड़प के दौरान सबिन महर्जन की गोली लगने से मौत हो गई।

मथुरा-काशी से जुड़ी नई मुहीम का आवान

नज़रिया

संघ की कब्ज़ा साप्ताहिक पत्रिका विक्रमा को दिए इंटरव्यू में होसबाले ने साफ कर दिया कि उस समय यानी 1984 में विश्व हिंदू परिषद और साधु-संतों ने तीन मंदिरों की बात की थी। इसलिए अगर संघ के स्वयंसेवक इन मंदिरों के लिए काम करना चाहते हैं, तो हम उनको रोकेंगे नहीं। साफ है, इस बयान के बाद इन मथुरा-काशी दोनों स्थलों से जुड़े विवाद और इनके आंदोलनों को एक नई ऊर्जा, इन मन्दिरों के जीर्णोद्धार, स्वतंत्र अस्तित्व हासिल करने में सफलता मिलेगी। इससे एक बार फिर

भाजपा की ताकत बढ़ेगी एवं हिन्दुओं को एकजुट करने का वातावरण बनेगा। बिहार में कुछ ही माह बाद विधानसभा चुनाव होने वाले हैं और साल 2027 की शुरुआत में ही उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव होंगे। बिहार एवं उत्तर प्रदेश दोनों ही प्रदेशों में जातिगत गणना और आरक्षण को बड़ा चुनावी मुद्दा बनाने की कोशिशें हो रही हैं। इन दोनों युनावों में कारी और मथुरा बड़ा मुद्दा बने, तो कोई आश्चर्य नहीं है। दोनों मन्दिर बिहार से सटे उत्तर प्रदेश के दो छोरों पर स्थित हिन्दुओं के दो बड़े पवित्र एवं पावन धर्मस्थल हैं।

ललित गम्भीर

हिं दू समूहों का दावा है कि मुस्लिम आक्रमणकारियों ने मथुरा में श्रीकृष्ण मंदिर और वाराणसी में काशी विश्वनाथ मंदिर को नष्ट करके उनके ऊपर मस्जिदें बना दीं। इसीलिये विश्व हिंदू परिषद और साधु-संतों ने 1984 में तीन मंदिरों की बात की थी, जिनमें में अवोध्या में श्रीराम मन्दिर बन चुका है। इसके बाद कई लोगों को लगाने लगा था कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ व उसके अन्य सहयोगी संगठन इससे समुच्छ हो चुके हैं और काशी व मथुरा के विषय को जैसे उन्होंने त्याग दिया है या भूला दिया है। लेकिन ऐसा नहीं है, लोकसभा में वक्फ विधेयक के पेश किए जाने से कुछ ही घंटे पहले संघ के सरकारी वाह एवं महामंत्री दत्तात्रेय होसबाले ने काशी ज्ञानवापी और मथुरा की श्रीकृष्ण जन्मभूमि से जुड़े आंदोलनों-कार्यक्रमों में संघ के स्वयंसेवकों को न रोकने की बात कह कर एक नई मुहीम के आहान का अप्रत्यक्ष रूप से संकेत दे दिया है, जिसके गहरे राजनीतिक निहितार्थ हैं। पिछले कुछ समय से इनको लेकर एक ऊहापोकी की स्थिति थी, लेकिन संघ के इस मुदे पर छये धूंधलकों को हाटो हुए अपने नये बयान से ऊर्जा का संचार किया है। भले ही इससे राजनीति गमये, लेकिन हिन्दू अस्था को इससे खुशी मिली है। संघ की कन्नड़ सामाजिक परिक्रिया को दिए इंटरव्यू में होसबाले ने साफ कर दिया कि उस समय यानी 1984 में विश्व हिंदू परिषद और साधु-संतों ने तीन मंदिरों की बात की थी। इसपाले अगर संघ के स्वयंसेवक इन मंदिरों के लिए काम करना चाहते हैं, तो हम उनको रोकेगे नहीं। साफ है, इस बयान के बाद इन मथुरा-काशी दोनों स्थलों से जुड़े विवाद और इनके आंदोलनों को एक नई ऊर्जा, इन मंदिरों के जीरोंद्वारा, स्वतंत्र अस्तित्व हासिल करने में सफलता मिलेगी। इससे एक बार फिर भाजपा की ताकत बढ़ी एवं हिन्दुओं को एकजुट करने का वातावरण बनेगा। बिहार में कुछ ही माह बाद विधानसभा चुनाव होने वाले हैं और साल 2027 की शुरुआत में ही उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव होंगे। बिहार एवं उत्तर प्रदेश दोनों ही प्रदेशों में जातिगत गणना और आरक्षण को बड़ा चुनावी मुद्दा बनाने की कोशिशें हो रही हैं। इन दोनों चुनावों में काशी और मथुरा बड़ा मुद्दा बने, तो काई आश्वर्य नहीं है। दोनों मन्दिर बिहार से सटे उत्तर प्रदेश के दो छोड़े पर स्थित हिंदुओं के दो बड़े पवित्र एवं पावन धर्मस्थल हैं। मथुरा में श्रीकृष्ण मंदिर भगवान कृष्ण के

जन्मस्थान के रूप में जारी वाराणसि ने काशा प्रवृत्तियां नापूर भगवान् शिव के ज्योतिर्लिङ्ग के रूप में हिंदू धर्म में अत्यधिक महत्वपूर्ण आस्था-स्थल हैं, जहाँ लोग मास्क प्राप्ति के लिए आते हैं। दोनों मंदिर हिंदू धर्म में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं और करोड़ भक्तों को आकर्षित करते हैं, दोनों मंदिर भारतीय संस्कृति और इतिहास का अहम हिस्सा हैं और उनकी धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत को दर्शाते हैं।

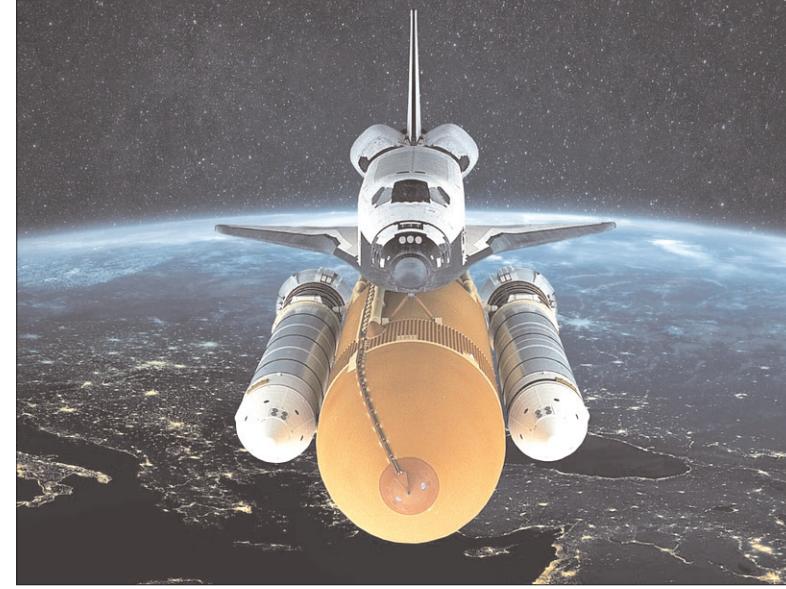
काशा में विश्वनाथ आर मथुरा में श्राकृष्ण जम्भूम्
मंदिर का पुनरुद्धार केवल भौतिक संरचनाओं को
पुनर्सृथापित करने का प्रयास नहीं है—यह भारत के
आध्यात्मिक और सांस्कृतिक सार को पुनर्जीवित करने एवं
आहत हिन्दू आस्था पर महम लगाने का आहान है।
सनातन धर्म की शाश्वत विरासत के प्रतीक ये मंदिर
आक्रमणकारियों के सदियों के हमलों के बावजूद हिंदुओं
की दृढ़ता और भक्ति के प्रमाण हैं। इन पवित्र स्थलों को पुनः
प्राप्त करना हमारे पूर्वजों के बलिदान का सम्मान करने,
हमारी विरासत की संरक्षित करने और हमारी समझ
परंपराओं को अनेवाली पीढ़ियों तक पहुँचाने का कार्य है।
यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हिंदू मूरियों के बारे में सच्चाई सबके
सामने है, लेकिन ये मामले अनसुलझे हैं। ऐतिहासिक और

महत्व पर जोर दिया। हांसबोले ने कहा कि लोगों को यह समझना चाहिए कि वैश्विक भूराजनीति में महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं। यदि भारत में हिंदू समाज मजबूत और संगठित नहीं है, तो केवल 'अखंड भारत' के बारे में बोलने से परिणाम नहीं मिलेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि अतीत की खोज में लगे रहने से समाज अन्य महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तनों पर अपना ध्यान केंद्रित नहीं कर पाएगा, जैसे अस्पृश्यता को समाप्त करना, युवाओं में मूल्यों का संचार करना तथा संस्कृति और भाषाओं को संरक्षित करना। निश्चित ही होसबले के बोल से जहां हिन्दू धर्म एवं संस्कृति की रक्षा को बल मिला है, वहां गांधीयता भी मजबूत होती हुई दिख रही है। संघ की स्थापना भी इसी उद्देश्य एवं राष्ट्रवादी आदेलन को एक मजबूत सांस्कृतिक आधार देने के लिए की गई थी। हमारी सदियों पुरानी प्राचीन सभ्यताएं जो धर्म, अहिंसा और भक्ति के सिद्धांतों पर आधारित थीं उपनिवेशवाद के शोर में अपनी आवाज खो न जाये, हिन्दू समाज पर रह-रह हो रहे हमले रुके, हिन्दू एवं सनातन संस्कृति को सलक्ष्य कुचलने के प्रयास विराम पाये-इन जटिल स्थितियों में भारत के लोगों को एक सांस्कृतिक छत्र के नीचे एक-जुट करने की दृष्टि से होसबले ने जगाया है, चेताया है, संगठित होने का आह्वान किया है। निश्चित तौर पर इन दोनों मन्दिर मुद्दों को नए सिरे से हवा देने की इस कवायद ने संघ विरोधियों एवं मुस्लिम तुष्टिकण की राजनीति करने वालों के सामने एक नई गंभीर चुनौती पेश की है। खासकर यह देखते हुए कि अयोध्या की रणनीतिक सफलता ने हिंदुत्व की राजनीति का आधार मजबूत किया है, हिन्दुओं को संगठित किया है। मर्दिं-मर्सिजद विवाद के बीच संघ की तरफ से पहले भी कई बयान आते रहे हैं। ये बयान दर्शाते हैं कि संघ भले ही सीधे-सीधे विवाद से खुद को भले ही अलग रखता हो, वैचारिक रूप से वह इनको पूरा समर्थन देता है। संघ का समर्थन देश को अराजक बनाने का कभी नहीं रहा, उसके सामने बड़ा लक्ष्य देश को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का भी है। बांग्लादेश समेत कई पड़ोसी देशों में भारत-विरोधी शक्तियां नए सिरे से सक्रिय होने लगी हैं, उनसे तड़ने की ताकत एवं रणनीति भी संघ चाहता है। संघ सामंजस्यपूर्ण और संगठित भारत के आदर्श को आकार देने के लिये प्रतिबद्ध है। श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति जैसे आदेलनों ने भारत के सभी बर्गों और क्षेत्रों को सांस्कृतिक रूप से संगठित किया।

अंतरिक्ष मिशनों के लिए नये ऊर्जा विकल्प

डा. शशाक द्विवदा

अं तारक्ष म सटलाइट्स का निर्बाध ऊर्जा प्रदान करने में कई चुनौतियां होती हैं। अधिकतर सेटलाइट्स सौर पैनलों से ऊर्जा प्राप्त करते हैं, लेकिन जब वे पृथ्वी की छाया में आते हैं (जैसे जियोसिं ८०८ और ऑर्बिट में), तो उन्हें ऊर्जा नहीं मिल पाती। यह समस्या पृथ्वी के चारों ओर घूमने वाले लो-अर्थ ऑर्बिट सेटलाइट्स में अधिक होती है, क्योंकि वे बार-बार छाया में आते हैं। अंतरिक्ष में सेटलाइट्स की उम्मीद बढ़ाने, उन्हें निर्बाध ऊर्जा प्रदान करने, उनके भार में कमी लाने और खवच्छ ऊर्जा स्रोत प्रदान करने के उद्देश्य से विज्ञानी अब कोल्ड पर्युजन तकनीक पर काम कर रहे हैं।



बढ़ाने, उन्हें निर्बाध ऊर्जा प्रदान करने, उनके भार में कमी लाने और खच्छ ऊर्जा स्रोत प्रदान करने के उद्देश्य से विज्ञानी अब कोल्ड पर्यूजन तकनीक पर काम कर रहे हैं।

हैदराबाद स्थित स्टार्ट-अप 'हाइलेनर टेक्नोलॉजीज' जल्द ही अंतरिक्ष में बिजली उत्पन्न करने के लिए इस तकनीक का प्रदर्शन करने की योजना बना रहा है। इसका उद्देश्य पृथ्वी की कक्षा में सेटेलाइट्स के जीवन को बढ़ाना और उनका वजन कम करना है। साथ ही अंतरिक्ष में लंबी अवधि के मिशन को सक्षम बनाने और अन्य ऊर्जा स्रोतों पर निर्भरता कम करने का इसका उद्देश्य है। कोल्ड पर्यूजन तकनीक, जिसे सामान्यतः 'लो-एनर्जी न्यूक्लियर रिएक्शन' के रूप में भी जाना जाता है, एक ऐसी अवधारणा है जो परमाणु संलयन को कम तापमान और दबाव पर संभव बनाने का दावा करती है। अगर यह तकनीक व्यावहारिक रूप से लागू हो सके, तो यह सेटेलाइट्स के लिए ऊर्जा उत्पादन में क्रांति ला सकती है। वर्तमान में सेटेलाइट्स मुख्य रूप से सौर ऊर्जा या रेडियोएक्टिव थर्मल जनरेटर पर निर्भर करते हैं, लेकिन इनकी सीमाएँ हैं—सौर पैनल सूरज की रोशनी पर निर्भर करते हैं और आरटीजीएस की ऊर्जा धीरे-धीरे कम होती जाती है। कोल्ड पर्यूजन के जरिए अगर एक छोटा, हल्का और लंबे समय तक चलने वाला ऊर्जा स्रोत बनाया जा सके, तो सेटेलाइट्स का जीवनकाल बढ़ सकता है। यह तकनीक ईंधन की जरूरत को कम कर सकती है और अंतरिक्ष मिशनों को अधिक कुशल बना सकती है।

है। कोल्ड पर्यूजन का विचार पहली बार 1989 में वैज्ञानिकों माटिन फ्लाइशमैन और स्टैनली पॉन्स द्वारा प्रस्तुत किया गया था। उन्होंने एक साधारण प्रयोगशाला प्रयोग में इयूटेरियम (हाइड्रोजन का एक समस्थानिक) को फैलेडियम धारा में संलयन करके अतिरिक्त ऊर्जा उत्पन्न की। हालांकि, उनके प्रयोग को दोहराने की कोशिश करने वाले कई वैज्ञानिक असफल रहे, जिसके कारण इस दावे पर संदेह बढ़ गया। पारंपरिक परमाणु संलयन में, हाइड्रोजन के समस्थानिक जैसे इयूटेरियम और ट्रिटियम को अत्यधिक उच्च तापमान पर एक साथ लाया जाता है ताकि उनके बीच का कूलम्ब बैरियर पार हो सके। यह बैरियर दो धनात्मक आवेशित नाभिकों के बीच उत्पन्न होने वाली प्रतिकर्षण शक्ति है। कोल्ड पर्यूजन में, यह प्रक्रिया बिना उच्च तापमान के, सामान्य परिस्थितियों में हो सकती है। हाइलेनर टेक्नोलॉजी ने कम ऊर्जा वाले परमाणु रिएक्टर (एलईएनआर) का परीक्षण करने के लिए एक अन्य नवोदित फर्म टेकमी2स्प्सेस सेटेलाइट्स के साथ समझौता किया है। एलईएनआर बिजली उत्पन्न करने के लिए हाइड्रोजन पर्यूजन का उपयोग करता है। कोल्ड पर्यूजन की अनूठी विशेषता यह है कि यह पर्यूजन रिएक्शन के लिए खपत की गई बिजली के मुकाबले अधिक बिजली उत्पन्न करता है।

हाइलेनर टेक्नोलॉजीज के संस्थापक और सीईओ सिद्धार्थ दुराइराजन ने बताया, 'प्रत्येक 100 वाट की इनपुट ऊर्जा के लिए एलईएनआर 178 वाट की आउटपुट थर्मल ऊर्जा उत्पन्न करता है।' उनका कहना कि परीक्षण एवं प्रक्षेपण के लिए कपनी ने स्काईरूट और इसरो के छोटे उपग्रह प्रक्षेपण यान और ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (पीएसएलवी) बुक किया है। गौरतलब है कि टेकमी2स्प्सेस अंतरिक्ष में

क्रक्कर का निर्माण कर रहा है। इसका अन्त में डाटा केंद्रों को संचालित करने के सकता है। उन्होंने कहा, 'क्यूबसैट पर सिंग यूनिट (जीपीयू) बहुत अधिक रखते हैं। हम उस गर्मी का दोहन करने वालट में उपयोग करने योग्य ऊर्जा के रूपात करने का प्रयास कर रहे हैं। इससे जी अवधि के मिशन और आफ-ग्रिड धाराओं के लिए नई संभावनाएं खुल जायेंगी।' इसकी 2 स्पेस के अनुसार उनकी कंपनी सरकार ने राज्य में युवाओं के लिए उद्यमियोजना और मुख्यमंत्री युवा रोजगार योजना के माध्यम से युवाओं को देश व प्रदेश की अर्थव्यवस्था की प्रगति में सीधे जोड़ने का काम किया है। अर्थात् मैं ये कह सकती हूं कि जिस प्रकार सूर्य अपने सर्वत्र प्रकाश से संपूर्ण धरा के कोने कोने को जीवन प्रदान करता है ठीक उसी प्रकार योगी जी की डबल इंजन सरकार ने प्रदेश के हर विषय वर्ग व क्षेत्र में प्रगति करने का कार्य किया है। लेकिन एक महिला के रूप में मैं योगीजी के इन आठ वर्षों के कार्यकाल में वो महसूस किया जो शायद एक राजा के राज्य में महसूस करती। उत्तरप्रदेश की आधी जनसंख्या जो कि हम महिलाओं की है जिन्हें 2017 से पहले की सरकारें सिर्फ पुरुषों पर निर्भर मतदाताओं की ब्रिणी में रखती थी। लेकिन 2017 के बाद योगीजी सरकार ने हम महिलाओं को अनेक योजनाओं के

सुशासन की योगी सरकार के आठ वर्षों में महिलाओं का सशक्तिकरण

सुषमा सिंह निवर्तमान उपाध्यक्ष, उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग
द्वां पूर्व और सार्वांगीनिश में दिव्या ब

हा एक आर सपूण विश्व में दिव्य व पवित्र महाकुंभ 2025 के सफल आयोजन ने शासन व प्रशासन के एक वीन उदाहरण को प्रस्तुत किया है वहीं देश के शशस्त्री प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और उत्तरप्रदेश के शशस्त्री मुख्यमंत्री श्रीयोगी आदित्यनाथ जी के प्रशासन और कौशलपूर्ण राष्ट्र के लिए वर्तमान व विविध के लिए एक उदाहरण पिछड़ हुआ है। बतौर उत्तरप्रदेश के नागरिक के रूप बात करुं तो पिछले सात- आठ वर्षों में मेरे प्रदेश ने योगी जी के नेतृत्व में वो नायाम प्राप्त किया है जिनकी कल्पना में वर्ष 2016 तक कर भी नहीं सकती थी। इन्फ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र में प्रदेश की प्रगति की बात करुं तो गंगा एक्सप्रेस वे पूर्वांचल एक्सप्रेस वे और बुदेलखंड एक्सप्रेस वे ने प्रदेश के नेटवर्क को सुमान बना दिया। कोरोना महामारी के दौरान योगी जी के नेतृत्व में मेरा राज्य प्रभावी रूप से इस विपदा से निपटा और मेडिकल सुविधाओं का विस्तार किया। योगी सरकार की कर्सान राहत योजना और मृदा स्वास्थ्यकार्ड योजना जिससे प्रदेश की कृषि व्यापान में बढ़ और किसानों की आय में भी सुधार हुआ है। इन सभी विकास रियोजनाओं के माध्यम से योगीजी ने सिद्ध कर दिया कि जिस प्रदेश का नवदाता खुशहाल है उस प्रदेश का आम जनमानस भी खुशहाल रहता है। योगी सरकार ने राज्य में युवाओं के लिए उद्यमी योजना और मुख्यमंत्री युवा रोजगार योजना के माध्यम से युवाओं को देश व प्रदेश की अर्थव्यवस्था की प्रगति में सीधे लोडने का काम किया है। अर्थात् मैं ये कह सकती हूं कि जिस प्रकार सर्व अपने वर्तं प्रकाश से संपूर्ण धरा के कोने कोने को जीवन प्रदान करता है ठीक उसी कार योगी जी की डबल इंजन सरकार ने प्रदेश के हर विषय वर्ग व क्षेत्र में प्रगति लगाने का कार्य किया है। लेकिन एक महिला के रूप में मैने योगीजी के इन आठ वर्षों के कार्यकाल में वो महसूस किया जो शायद एक राजा के राज्य में महसूस नहीं। उत्तरप्रदेश की आधी जनसंख्या जो कि हम महिलाओं की है जिन्हें 2017 में पहले की सरकारें सिर्फ पुरुषों पर निर्भर मतदाताओं की श्रेणी में रखती थी। लेकिन 2017 के बाद योगीजी सरकार ने हम महिलाओं को अनेक योजनाओं के

रवाई पढ़ार्थी में मिलावट है गंभीर मुद्दा

तिर्यक्

तराखंड की राजधानी देहरादून में कुट्टा का मिलावटी व विषाक्त आटा इस्तेमाल करने के कारण 100 से अधिक लोग फूड पॉइंजनिंग का शिकार हो गये। नवरात्रि के ब्रत रखने वाले इन ब्रत पारियों को अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। जिस समय राजधानी देहरादून में यह घटनाकृत आटा बेचा जा रहा था और लोग इसे खरीद रहे थे ठीक उसी समय मुख्यमंत्री श्री बघ्कर सिंह धामी देहरादून, हिमाचल, उथम सिंह नगर व नैनीताल जिलों में अनेक शहरों व ग्रामों के प्राचीन नाम बदलने में व्यस्त थे। इसे संयोग कहें या प्रयोग कि ईद के दिन जब उपलमानों को कोई सौमात दिया जाना चाहिये था ठीक उसी दिन मुख्यमंत्री धामी मुगल गढ़ल या बिट्टिशकाल में रखे गये थे यह उर्दू फारसी भाषा के नामों को बदलकर अपने संस्कृतियों के अनुरूप बता रहे थे और उसी समय बड़े गर्व से नाम बदलने वाली अपनी इस कवायद को जनभावनाओं के मद्देनजर और भारतीय संस्कृति और भाषासत के अनुरूप बता रहे थे। धामी ने खानपुर, मुहम्मदपुर व नवबाबी रोड जैसे नामों की भी बदल डाला। बहराहल, कथित तौर पर जिस लोगों की भावनाओं के मद्देनजर उत्थापनी धामी नाम बदल रहे थे उसी समय वही उत्तराखण्ड निवासी देहरादून में से एक याम बिक रहा जहरीला कुट्टा का आटा खाने के लिये मजबूर थे। साप है कि सरकार की अधिकारियों में से एक ने उत्तराखण्ड के अधिकारी ने उसे खाना दिया था।

